# ''नये सिरे से जन्म लेना आवश्यक है''

# ( 3:1–36 )

कई बार हमें उन बातों में अन्तर नहीं दिखाई देता जिनमें वास्तव में काफ़ी अन्तर होता है। मुझे याद है कि जब हमारी नई–नई शादी हुई थी तो मैं और मेरी पत्नी अपनी एक मित्र के यहां गए थे। मेरी पत्नी की कॉलेज के समय की सबसे अच्छी इस सहेली की शादी भी अभी हाल ही में हुई थी, और हम उसके पति के बारे में जानने के लिए बड़े उत्सुक थे। इस आदमी के बारे में जिससे हम पहले कभी नहीं मिले थे, जानने के हमारे अथक प्रयासों के बावजूद उसकी पत्नी ने उसके बारे में हमें कुछ अधिक नहीं बताया। अन्त में मेरी पत्नी ने पूछ ही लिया, ''हमें भी उसके बारे में कुछ बताओ! वह दिखने में कैसा है?'' हमारी मित्र ने मेरी पत्नी की ओर मुंह करते हुए कहा, ''तुझे तो पता होना चाहिए। तेरा भी तो पति है!'' एक पति होने के कारण निश्चय ही मुझे उम्मीद थी कि स्त्रियों की सोच से पुरुषों में कुछ अधिक अन्तर होते हैं!

यूहन्ना 3 अध्याय विश्वास के प्रति ऐसी ही सोच रखने के विरुद्ध चेतावनी देता है। हम यह कहने की परीक्षा में पड़ सकते हैं कि, ''विश्वास तो विश्वास ही है,'' या ''विश्वास एक ही तरह का होता है।'' निकुदेमुस से यीशु की बातचीत वास्तविक विश्वास और निम्न या झूठे विश्वास में अन्तर करने की ऐसी असफलता को चुनौती देती है। यूहन्ना रचित सुसमाचार विश्वास पैदा करने के लिए लिखा गया था (20:31), अत: यूहन्ना के लिए यह उस विश्वास की परिभाषा बड़ी सतर्कता से देना जिससे वह विश्वास दिलाने की कोशिश कर रहा था, बहुत ही आवश्यक था।

यूहन्ना 3 अध्याय का अध्ययन वास्तव में 2:23 से आरम्भ होना चाहिए, जो बताता है कि यीशु फसह के पर्व के लिए यरूशलेम में था। इस पर्व पर वह चिह्न दिखा रहा था और लोग उसमें विश्वास ला रहे थे। वृत्तांत में यह लगता है कि यीशु बिल्कुल वही काम कर रहा था जो उसने करने के लिए ठहराया हुआ था। परन्तु, यूहन्ना लिखता है कि ''यीशु ने अपने आप को उनके भरोसे पर नहीं छोड़ा, क्योंकि वह सब को जानता था'' (2:24)।

## जिस विश्वास को विश्वास नहीं कहा जा सकता

प्रारम्भिक विश्वासी अपने विश्वास में वहां तक नहीं पहुंचे थे जहां तक यीशु उन्हें पहुंचाना चाहता था। वे विश्वास तो करते थे परन्तु यह वह विश्वास नहीं था जिससे उन्हें पूरी तरह से समझ आ जाता कि यीशु वास्तव में कौन था। यीशु ने अपने और परमेश्वर के राज्य में और बातें करनी चाहीं परन्तु ऐसी अवधारणाओं की लोगों के बड़े-बड़े समूहों में चर्चा करनी कठिन थी। परिणामस्वरूप यूहन्ना ने यीशु की शिक्षा को निजी विश्वास से जोड़कर वास्तविक अर्थात मसीही विश्वास को दिखाया जिसमें उसने निकुदेमुस की यीशु से बातचीत का वर्णन किया।

निकुदेमुस, जो केवल यूहन्ना रचित सुसमाचार में ही दिखाई देता है, का परिचय ''फरीसियों में से निकुदेमुस नामक एक मनुष्य ... यहूदियों का सरदार'' (3:1) के रूप में करवाया गया है। वाक्यांश ''सरदार'' इस बात का संकेत है कि वह सत्तर लोगों की प्रसिद्ध यहूदी महासभा का सदस्य था, जो उस समय यहूदियों पर शासन करती थी। ऐसे पद से शक्ति, धन और ख्याति मिलती थी, जिस कारण निकुदेमुस उस यहूदी समाज का एक श्रेष्ठ व्यक्ति बन गया था। बाद में यीशु ने उसे ''इस्राएलियों का गुरु'' (3:10) भी कहा था। सैद्धांतिक रूप से निकुदेमुस जैसे पद वाले लोग यीशु के सबसे बड़े शत्रु थे। परन्तु निकुदेमुस का मन सच्चाई की खोज में था; सो वह रात के समय यीशु से पूछने के लिए आया कि वह कौन है।

निकुदेमुस ने यीशु से अपनी बातचीत विश्वास प्रकट करते हुए आरम्भ की। उसने कहा था, ''हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है; क्योंकि कोई इन चिह्नों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, नहीं दिखा सकता'' (3:2)। उसने यह विश्वास करने का दावा तो अवश्य किया कि यीशु वास्तव में चमत्कारी चिह्न दिखाता था और यह भी कि यीशु को यह शक्ति परमेश्वर की ओर से दी गई थी। निकुदेमुस को दिए गए यीशु के उत्तर के ढंग से इस पद को पहली बार पढ़ने वाला चौंक सकता है। सामान्यत: हमें किसी से यह कहने की अपेक्षा होगी, ''धन्यवाद, निकुदेमुस। मैं इस सम्मान तथा उत्साहित करने वाली बातों से तुम्हारी सराहना करता हूं, विशेषकर यह जानते हुए कि महासभा में तुम्हारे अधिकतर मित्रों में अधिक को यह अच्छा नहीं लगेगा।'' परन्तु रूखा सा उत्तर देते हुए यीशु तो जैसे-जैसे निकुदेमुस पर बरस ही पड़ा, ''मैं तुझ से सच सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता'' (3:3)।[1]

विशेषकर निकुदेमुस के लिए यीशु द्वारा प्रस्तुत यूनानी शब्द *anothen* जिसका अर्थ ''पुन:'' या ''ऊपर से'' हो सकता है, उलझाने वाला था।[2] उसके बाद की बातचीत से लगता है कि उनमें होने वाली बातचीत दो अलग-अलग भाषाओं में थी। यीशु तो स्वर्ग की भाषा बोल रहा था जबकि निकुदेमुस ''पृथ्वी की'' (3:31)। यीशु परमेश्वर की सामर्थ से आत्मिक पुनर्जन्म की आवश्यकता की घोषणा कर रहा था जबकि निकुदेमुस यह समझाने की कोशिश कर रहा था कि कोई अपनी मां के गर्भ में शारीरिक रूप से दोबारा कैसे जा सकता है! रात के समय यीशु से मिलने के लिए आने वाले इस व्यक्ति में नासरत के इस गुरु के बारे में सराहनीय जिज्ञासा तो थी परन्तु उसकी सोच अभी भी पूरी तरह से सांसारिक थी

और अभी तक वह परमेश्वर के राज्य में प्रविष्ट नहीं हुआ था। यीशु ने निकुदेमुस से बात करके उसे ठोकर और चुनौती देते हुए वास्तविक विश्वास की परिभाषा बताई। उसने स्पष्ट रूप से दो बातों का संकेत दिया कि परमेश्वर का राज्य क्या नहीं है।

**धर्म की धार्मिक प्रथा नहीं**

''धर्म'' एक ऐसा शब्द है जिसके बहुत से अर्थ निकाले जाते हैं। सकारात्मक पक्ष में, इसका अर्थ ''परमेश्वर की सेवा तथा आराधना'' हो सकता है।[3] नकारात्मक पक्ष से इसका संकेत ''धार्मिक रिवाज़ों, मान्यताओं और प्रथाओं या कर्मकांडों की बनी हुई रीतियां'' हो सकता है।[4] कर्मकांडों की रीतियों वाले इस अर्थ पर यीशु के आग्रह से ज़ोरदार आक्रमण होता है कि परमेश्वर के राज्य में केवल नये जन्म अर्थात ऊपर से जन्म लेकर ही प्रवेश किया जा सकता है। अपने धर्म की दृष्टि से निकुदेमुस व्यवस्था का पालन गंभीरता से करने वाला व्यक्ति था। क्या यीशु यह कह रहा था कि व्यवस्था के अनुसार चलना परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए काफी नहीं था? बेशक! अपनी सांसारिक सोच में बंधे निकुदेमुस को समझ नहीं आ रहा था कि उसे क्या कहा जा रहा है।

नये/ऊपर से जन्म के बारे में यीशु की घोषणा पर निकुदेमुस द्वारा अपनी उलझन बताने पर यीशु ने फिर से बताया। इस बार उसने ''नये सिरे से जन्म'' के स्थान पर ''जल और आत्मा से जन्म'' शब्दों का इस्तेमाल किया (3:5)। ''जल और आत्मा'' से इस चर्चा में बपतिस्मे की अवधारणा मिल गई।[5] ''जल'' का अर्थ था कि उसे शुद्ध होने की आवश्यकता थी और ''आत्मा'' का अर्थ था कि निकुदेमुस को बदल सकने वाली सामर्थ पवित्र आत्मा की शक्ति से कम नहीं हो सकती थी। ऐसा विचार निकुदेमुस के लिए उलझाने वाला तो था ही साथ ही अपमानित करने वाला भी था।

यीशु की सेवकाई के समय से पहले किसी अन्यजाति द्वारा यहूदी बनने का निर्णय लेने पर यहूदी धर्म में बपतिस्मा देना आम बात थी। यहूदी (धर्मान्तरित अर्थात प्रोसीलाइट) बनने के लिए खतना, बलिदान और बपतिस्मा के तीन कार्य आवश्यक थे। यह सुझाव देना कि यहूदी महासभा के प्रमुख सदस्य को बपतिस्मा लेने की आवश्यकता थी, सोचा भी नहीं जा सकता था। यीशु ने ज़ोर देकर कहा कि आवश्यक नहीं कि सभी नियमों का पालन करने वाला परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर ही जाए अर्थात स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के लिए तो ऐसा हृदय होना आवश्यक है जो अपने आपको परमेश्वर के सामने दीन करे और पवित्र आत्मा को इसे बदलने और परमेश्वर की नज़र में नया बनाने की अनुमति दे।

आज लोगों में आम धारणा पाई जाती है कि यदि वे किसी प्रकार की समस्या में नहीं पड़ते और दूसरों को हानि नहीं पहुंचाते तो इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर उनसे संतुष्ट है। पवित्र शास्त्र की ये आयतें ऐसे विचार का दृढ़ता से विरोध करती हैं। यीशु हमारे सामने खड़ा है, हमारी आखों में झांक रहा है जैसे उसने निकुदेमुस की आंखों में झांका था और कहता है, ''तेरे लिए नये सिरे से जन्म लेना आवश्यक है!''

**केवल मन के मानने की बात ही नहीं**

आपको क्या लगता है कि निकुदेमुस रात के समय यीशु के पास क्यों आया था? क्या यह उन दोनों के मिलने का सबसे उपयुक्त समय था? क्या यह अध्ययन करने का अच्छा समय था जिसकी शिक्षा रब्बी लोग आम तौर पर दिया करते थे? क्या निकुदेमुस यीशु के पास दिन में आने से डरता था? यूहन्ना के लेखों में अंधेरा एक मुख्य अवधारणा है और रात के समय आना ऐसे व्यक्ति के लिए उपयुक्त था जो अभी भी आत्मिक अंधेरे में था (यूहन्ना 3:19-21)। वह अभी भी शक्तिशाली पद से चिपका हुआ था जो उसे यीशु के प्रति उसके खिंचने को लोगों में बताने से रोकता था। निकुदेमुस को जल और आत्मा से नये सिरे से जन्म लेने के लिए कहकर यीशु अन्य बातों के अलावा उसे विश्वास करने और अपने विश्वास को बपतिस्मे के सार्वजनिक कार्य में व्यक्त करने के लिए कह रहा था। निकुदेमुस के लिए मां के गर्भ में दोबारा जाने के विचार की तरह निश्चय ही ऐसा सोचना भी असम्भव था!

यूहन्ना रचित सुसमाचार में निकुदेमुस का ज़िक्र दो बार आता है। अगली बार हम उसे तब देखते हैं जब तम्बुओं के पर्व के दौरान महासभा यीशु को गिरफ्तार करके मारने का यत्न कर रही थी (7:50-52)। तब तो, वह यीशु में अपनी रुचि के बारे में शांत था परन्तु तर्क देने में उसने बड़ा साहस दिखाया था कि सभा को चाहिए कि यीशु पर मुकदमा "नियम के अनुसार" किया जाए। महासभा के बाकी लोगों की प्रतिक्रिया बहुत तीव्र और प्रचण्ड थी। उन्होंने उसे डांटकर कहा, "क्या तू भी गलील का है" (7:52)। ऐसे बुरे उत्तर के कारण, इसमें हैरानी नहीं होती कि निकुदेमुस अभी भी एक गुप्त चेला था। अन्तिम बार हम निकुदेमुस को यीशु के गाड़े जाने के समय देखते हैं (19:39, 40)। वहां हम उसे अरमितिया के यूसुफ नामक एक और गुप्त चेले के साथ यीशु की लाश को तैयार करके कब्र में रखते समय देखते हैं। कहानी के अन्त तक स्पष्टतः निकुदेमुस ने अपने विश्वास से "लोगों में दिखाकर" यीशु के लिए कुछ ऐसा कर लिया था जो नये जन्म पर रात के समय हुई चर्चा में यीशु ने उसे करने के लिए कहा था अर्थात उसने नया जन्म ले लिया होगा।

यूहन्ना रचित सुसमाचार में निकुदेमुस में आए इन तीन परिवर्तनों के कारण जो हमें उसमें मिलते हैं, वह उन लोगों के लिए एक दिलचस्प आदर्श के रूप में काम करता है जिन्हें सार्वजनिक रूप से अपने विश्वास को व्यक्त करने का साहस दिखाने में कठिनाई आती है। स्वाभाविक रूप से ही बपतिस्मे के द्वारा नया जन्म एक सार्वजनिक कार्य है। यह निर्णय इस बात की घोषणा है कि हम यीशु के हैं।

आज, हम पर अपनी संस्कृति में मिल जाने और अलग न दिखने का जबर्दस्त दबाव है। मसीही लोगों में "स्वीकृत" होने और "सामान्य" लोगों की तरह दिखने की इतनी चाहत रहती है कि कभी-कभी हम अपने आपको भुलाकर समझौता कर लेते हैं। ऐसा करके हम उसी विश्वास का इन्कार करते हैं जिसका प्रचार हम बपतिस्मा लेकर दृढ़ता से करते हैं। चाहे गंदी भाषा की बात हो, शराब पीने की या जीवन के प्रति स्वार्थ की, यीशु पुकारता है कि खड़े लोगों में अपने विश्वास को दिखाएं!

# नया जन्म दिलाने वाला विश्वास

कंज़रवेटिव विचारधारा का स्तंभकार कैल थॉमस समाचार व्यवसाय के अपने लोगों में गहरी मसीही आस्थाओं वाले व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध है। एक बार यह कहानी फैलने पर जिसमें कोई व्यक्ति शामिल था जिसे लोग मसीही कहते थे, थॉमस के एक साथी ने उससे पूछा, ''कैल क्या तुम नया जन्म पाए मसीही नहीं हो ?'' जवाब में उसने पूछा, ''तुम कहना क्या चाहते हो ?'' मित्र अपने प्रश्न का अर्थ नहीं जानता था, सो थॉमस ने कहा, ''हां, मैं नया जन्म पाया हुआ मसीही हूं, परन्तु मैं तुम्हें बताता हूं कि 'नये सिरे से जन्म' लेने को मैं क्या समझता हूं।''[6]

## परमेश्वर की सामर्थ

नये जन्म से आरम्भ और समाप्ति परमेश्वर की सामर्थ से ही होती है। यीशु ने निकुदेमुस के सामने यह ऐलान किया कि नया जन्म पवित्र आत्मा की सामर्थ के कारण सम्भव और उपलब्ध होता है (3:6-8)। परमेश्वर के दान को पाने के ढंग में हम इतना उलझ सकते हैं कि हमें याद ही न रहे कि हमारे लिए सबसे बड़ा दान परमेश्वर के आत्मा का दिया जाना है।

नये सिरे से जन्म लेने का आधार परमेश्वर की सामर्थ में है, इसलिए यह भी हमें अपने जीवनों में वास्तविक और महत्वपूर्ण बदलाव की उम्मीद दिखाता है। हम पुराने मित्रों को देखने की योजनाएं बनाते हैं जिन्हें कई वर्षों बाद देखकर हमें हैरानी होती है कि वे कितने बदल गए हैं। वर्षों पहले जिन लोगों को हम जानते थे और उनके व्यक्तित्वों से परिचित होने के कारण, हमारे लिए यह कल्पना करना आसान है कि वे अब भी वही लोग हैं जिन्हें हम बीस या चालीस वर्ष पूर्व जानते थे। क्या उनके जीवन में बहुत ही गम्भीर परिवर्तन आए होंगे ? जहां तक मसीही लोगों की बात है, इसका उत्तर चौंकाने वाला है, ''हां!'' परमेश्वर की सामर्थ से हम बदल रहे हैं।

## यीशु में विश्वास

विश्वास नये जन्म का एक निर्णायक पहलू है। यह विश्वास यीशु का परमेश्वर की ओर से होने की बात कहने का नहीं (3:2), बल्कि मसीह अर्थात परमेश्वर के पुत्र के रूप में उस पर भरोसा रखने का निर्णय है (20:31)। यीशु ने इस विश्वास की तुलना उस विश्वास से की जो जंगल में इस्राएलियों के लिए आवश्यक था जब मूसा ने पीतल का सांप खड़ा किया था (3:14; गिनती 21:4-9)। उस समय इस्राएली लोग उन्हें जंगल में लाने के कारण मूसा और परमेश्वर के विरुद्ध बुड़बुड़ा रहे थे। उनकी शिकायतों से तंग आकर, परमेश्वर ने उनके डेरे में विषैले सांप भेजे और बहुत से लोग उनके काटने से मर गए थे। लोग छुटकारे के लिए परमेश्वर को पुकारने लगे और परमेश्वर ने मूसा को एक खम्भे पर पीतल का सांप रखने का निर्देश दिया था। सांप के डसे हुए जो लोग उस पीतल के सांप को देख लेते थे, उनकी मौत नहीं होती थी। इसके लिए इतने विश्वास की आवश्यकता थी जिससे वे सांप को देख सकें; परन्तु उसे देखकर वे परमेश्वर की सामर्थ से चंगे हो जाते थे।

यीशु को क्रूस पर ''चढ़ाया'' गया था (यूहन्ना 12:32,34) और विश्वास से उसकी बात मानते हुए, उसकी ओर देखने वाले भी परमेश्वर की सामर्थ से बचाए जाते हैं!

**निर्णय जो सुनाया जाता है**

परमेश्वर की सामर्थ के कारण नया जन्म सम्भव है। यह जन्म यीशु में विश्वास रखने से होता है (3:16)। परन्तु यह केवल उसी समय होता है जब विश्वास करने के निर्णय को बपतिस्मे के द्वारा सार्वजनिक रूप से मान लिया जाता है अर्थात ''जल और आत्मा से जन्म'' लेने पर (3:5)। यह निर्णायक कार्य एक व्यक्ति और परमेश्वर में नये सम्बन्ध और उस व्यक्ति और यीशु में विश्वास करने वाले अन्य विश्वासियों के समुदाय अर्थात कलीसिया के बीच सम्बन्ध का आरम्भ है। नये जन्म में यीशु मसीह में व्यक्ति का विश्वास होना तो आवश्यक है ही पर इसके लिए उस विश्वास को बपतिस्मे के द्वारा सार्वजनिक रूप में लोगों में दिखाना भी आवश्यक है (मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:38; 22:16)।

## सारांश

कहते हैं कि जॉर्ज वाइटफील्ड (1714-1770 ईस्वी) इसी भाग से बार-बार प्रचार करता था जिसका हमने अभी-अभी अध्ययन किया है। एक दिन एक मित्र ने उससे पूछा, ''जॉर्ज, तुम्हारा संदेश 'नये सिरे से जन्म लेना आवश्यक है' पर ही क्यों रहता है?'' वाइटफील्ड ने दृढ़ता से उत्तर दिया, ''क्योंकि तुम्हारे लिए नये सिरे से जन्म लेना *आवश्यक* है!''

यीशु को एक असाधारण मनुष्य, एक महान शिक्षक परन्तु परमेश्वर के पुत्र से कम मानने वालों से, यीशु कहता है, ''तुम्हारे लिए नये सिरे से जन्म लेना आवश्यक है।''

उन सब लोगों से जिनका विश्वास है कि परमेश्वर की नज़र में भलाई करना ही काफ़ी है, यीशु कहता है, ''तुम्हारे लिए नये सिरे से जन्म लेना आवश्यक है।''

उन सब लोगों से जो अपने परम्परागत विश्वास से संतुष्ट हैं, यीशु कहता है, ''तुम्हारे लिए नये सिरे से जन्म लेना आवश्यक है।''

उन सब से जो केवल एक व्यक्तिगत अर्थात निजी धर्म चाहते हैं, यीशु कहता है, ''तुम्हारे लिए नये सिरे से जन्म लेना आवश्यक है।''

उन सबसे जो बपतिस्मे को व्यर्थ, अप्रासंगिक ऐतिहासिक यादगार मानते हैं, यीशु कहता है, ''तुम्हारे लिए नये सिरे से जन्म लेना आवश्यक है।''

---

पाद टिप्पणियां

[1]यूहन्ना रचित सुसमाचार में हमें केवल यहीं पर ''परमेश्वर का राज्य'' शब्द मिलता है। इसी विचार को व्यक्त करने के लिए उसने ''जीवन'' या ''अनन्त जीवन'' का इस्तेमाल किया। [2]यूहन्ना 3:31 देखिए जहां इसका अर्थ ''स्वर्ग से'' है। [3]*वैबस्टर'स नाइन्थ न्यू कॉलेजियेट डिक्शनरी* (1988), s.v. ''रिलिजन।''

[4]वहीं। [5]''जल से जन्म'' वाक्यांश से बपतिस्मे का सुझाव मिला, जो कि यहूदियों में पहले ही प्रसिद्ध था और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के कारण वर्तमान में चर्चा का विषय था। देखिए 1:25; 3:22–26; 4:1–3.
[6]''शैफर्डिंग, सर्वेंटहुड एण्ड सक्सेस,'' *पास्टर टू पास्टर,* अंक 13 (कोलोरेडो स्प्रिंग्ज़, कोलो.: फोकस ऑन द फैमिली, 1994), साउंड कैसेट।